



जागत

हमारा

वौपाल से
भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 12-18 फरवरी 2024 वर्ष-9, अंक-43

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ:-8, मूल्य:- 2 रुपए

पिछले वर्ष जिले से 1000 क्विंटल महुआ भेजा था, इस बार 2000 क्विंटल महुआ की हो रही मांग

लंदन के व्यापारियों को भाया उमरिया का महुआ

» मध्यप्रदेश के उमरिया का महुआ हो रहा एक्सपोर्ट

» व्यापारियों ने 110 रुपए किलो की दर से इसकी खरीदी पिछले साल की थी

» अच्छी कीमत मिलने से आदिवासियों को इसका सीधा फायदा हो रहा

» प्रदेश सरकार ने पिछले साल विदेशी कंपनियों से अनुबंध किया था

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्यप्रदेश के उमरिया में उत्पादित महुआ लंदन के व्यापारियों को खूब भा रहा है। यही वजह है कि गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष महुआ की मांग दोगुनी होने की संभावना जताई जा रही है। इसके लिए जल्द ही विदेशी व्यापारियों और वन विभाग के बीच एमओयू साइन हो सकता है। लंदन के व्यापारियों ने पिछले वर्ष उमरिया जिले से 1000 क्विंटल महुआ उमरिया से खरीदा था। जबकि समूचे प्रदेश से लगभग 2000 क्विंटल महुआ विदेश भेजा गया था। सबसे ज्यादा मात्रा उमरिया जिले की रही। महुआ बीनने वाले आदिवासियों को ज्यादा से ज्यादा फायदा हो इसके लिए मध्य प्रदेश सरकार ने पिछले साल विदेशी कंपनियों के साथ अनुबंध किया था। महुआ का समर्थन मूल्य 3500 रुपए है, लेकिन लंदन के व्यापारियों ने 110 रुपए प्रति किलो की दर से इसकी खरीदी पिछले साल की थी। विदेशी बाजार में महुआ की अच्छी कीमत मिलने से आदिवासियों को सीधा फायदा हो रहा है। लंदन के व्यापारियों ने अकेले उमरिया जिले से दो हजार क्विंटल महुआ खरीदा तो इसका लाभ भी यहां के आदिवासियों को ही होगा।



बिचौलियों की भूमिका खत्म

पहले औने-पौने रेट पर बिचौलियों ग्रामीणों से उनका महुआ खरीद लेते थे और खुद ज्यादा मुनाफा कमाते थे लेकिन जब से सरकार ने महुआ का समर्थन मूल्य तय किया है बिचौलियों की भूमिका खत्म हो गई है। अब बाजार में पांच हजार रुपए क्विंटल की दर से महुआ बिक रहा है। महुआ का मूल्य संवर्धन करने के लिए प्रदेश सरकार ने पिछले साल विदेशी कंपनियों से अनुबंध किया था। इससे आदिवासियों को अपने वनोपज की अच्छी कीमत भी मिल गई थी।

जमीन पर नहीं गिरेगा महुआ

अभी तक महुआ जमीन पर गिरता था और उसकी गुणवत्ता कम हो जाती थी। इससे कम मात्रा में उपज संग्राहकों के हाथ में आ पाती थी। महुआ की पूरी उपज गुणवत्ता के साथ आदिवासियों के हाथ में आ सके इसके लिए अब महुआ संग्राहकों को नेट (जाली) दिया जा रहा है। हरे रंग का यह नेट महुआ संग्राहक पेड़ के नीचे जमीन से दो-तीन फीट की ऊंचाई पर लगा देंगे जिससे महुआ जमीन नहीं गिरेगा और खराब नहीं होगा। नेट पर गिरने वाले महुए को समेटने में समय भी ज्यादा नहीं लगेगा। इस तरह होने वाले महुआ संग्रहण से ग्रामीणों के हाथ में सौ प्रतिशत फसल आएगी।

यह होता है उपयोग

महुआ का उपयोग सिर्फ शराब बनाने के लिए ही नहीं होता बल्कि इसके दूसरे भी कई तरह के उपयोग किए जाते हैं। महुए का उपयोग मक्खन बनाने, जेम और जेली सहित कई तरह की खाने की वस्तुएं बनाने में किया जाता है। इसके अलावा महुआ से शरीर पर लगाई जाने वाली कीम भी बनाई जाती है। इसके अलावा भी दूसरे कई उपयोग महुए के हैं।

अब ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी कहलाएंगे 'कृषि विस्तार अधिकारी'

कृषि मंत्री कषाना ने की घोषणा, बोले-खेती में मध्यप्रदेश को बनाएंगे नबर-वन



भोपाल। जागत गांव हमार

प्रदेश के कृषि मंत्री ऐदल सिंह कषाना ने कहा है कि प्रदेश के ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, अब कृषि विस्तार

अधिकारी कहे जाएंगे। उन्होंने कहा कि हम और आप जनता जनार्दन के साथ मिलकर मप्र को कृषि के क्षेत्र नं.1 प्रदेश बनाएंगे। कृषि मंत्री कृषि विभाग के अधिकारी और कर्मचारियों द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। कषाना ने आश्चर्य किया कि विभागीय अधिकारियों कर्मचारियों की समस्याओं का नियम अनुसार 15 दिन में निराकरण किया जाएगा। मंत्री ने कहा कि कृषि विस्तार अधिकारी कृषि विभाग की रीढ़ है। हम सभी को मिलकर जुट जाना चाहिए जिससे राष्ट्रीय स्तर पर मप्र को आठवीं

बार भी कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त हो। उन्होंने ईमानदार अफसरों की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके काम में बाधा डालने को किसी भी व्यक्ति को इजाजत नहीं दी जाएगी। मंत्री ने कहा कि पीएम मोदी की मंशानुसार हमे किसानों की आय को दोगुना करने के लिए सभी प्रयास करने होंगे। इसमें कृषि विभाग के सभी अधिकारियों की अहम भूमिका है। किसानों उच्च गुणवत्ता का सही बीज मिले, यह हम सभी की जिम्मेदारी है। किसानों के साथ इस मामले में धोखाधड़ी करने वालों को बिल्कुल भी बख्शा नहीं जाएगा।

एआई और पटवारी द्वारा सत्यापन किया जाएगा

किसान फसल की जानकारी एमपी किसान एप से भी होगी दर्ज

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रदेश के किसानों को सरकार द्वारा घर बैठे कई तरह की योजनाओं का उपयोग करने की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इसी के तहत अब किसान घर बैठे ही एमपी किसान एप के माध्यम से अपनी फसलों की जानकारी दर्ज कर सकेंगे। इसमें फसल हानि, न्यूनतम समर्थन मूल्य, भावांतर योजना की जानकारी दर्ज की जाएगी। किसानों दर्ज कराई गई जानकारी का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं पटवारी द्वारा सत्यापन किया जाएगा। सत्यापन के बाद किसान की जानकारी दर्ज हो जाएगी। मेरी गिरदावरी-मेरा अधिकार में अब किसान निश्चित होकर अपनी फसल की जानकारी एमपी किसान

एप के माध्यम से दर्ज कर सकेंगे। इस जानकारी का उपयोग फसल हानि, न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना, भावांतर योजना, किसान क्रेडिट कार्ड और कृषि ऋण में किया जाएगा। किसान की इस जानकारी का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं पटवारी से सत्यापन होगा। मेरी गिरदावरी-मेरा अधिकार में किसान को यह सुविधा उपलब्ध करवाई गई है कि वे अपने खेत से ही स्वयं फसल की जानकारी एमपी किसान एप पर दर्ज कर अपने आप को रजिस्टर सकते हैं। इस एप को गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। किसान एप पर लॉगिन कर फसल स्व-घोषणा, दावा आपत्ति ऑप्शन पर क्लिक कर अपने खेत को जोड़ सकते हैं।

गत वर्ष 133 लाख 12 हजार हेक्टेयर में बोवनी हुई थी, जौ, चना, मटर, मसूर की बोवनी लक्ष्य से अधिक

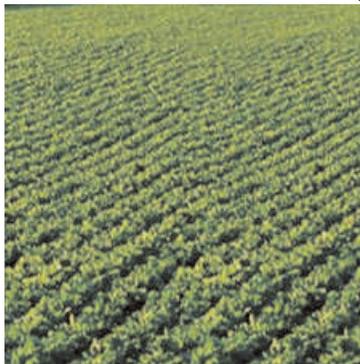
मध्य प्रदेश में 138 लाख हेक्टेयर में हुई रबी बोवनी

प्रदेश में रबी फसलों की बोवनी

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्य प्रदेश में 138 लाख हेक्टेयर में हुई रबी बोवनी- चालू रबी सीजन में बोवनी समाप्ति की ओर है। लगभग 138.25 लाख हेक्टेयर में बोवनी की गई है। जबकि गत वर्ष 133 लाख 12 हजार हेक्टेयर में बोवनी हुई थी। इस प्रकार लक्ष्य के विरुद्ध लगभग 98.6 फीसदी बोनी पूरी हो गई है। वहीं राज्य की प्रमुख फसल गेहूं की बोवनी 87.10 लाख हेक्टेयर में की गई है। वहीं राज्य में जौ, चना, मसूर, मटर की बोवनी

लक्ष्य से अधिक रकबे में हुई है। कृषि विभाग के मुताबिक प्रदेश में रबी फसलों का सामान्य क्षेत्र 133 लाख 82 हजार हेक्टेयर है। इस वर्ष 140.26 लाख हेक्टेयर में रबी फसलें लेने का लक्ष्य रखा गया था। इसके विरुद्ध 138.25 लाख हेक्टेयर में बोवनी की गई है। इसमें राज्य की प्रमुख रबी फसल गेहूं की बोवनी 87.10 लाख हेक्टेयर में हुई है। जबकि गत वर्ष 86.30 लाख हे. में गेहूं बोया गया था। दूसरी प्रमुख फसल चने की बोवनी लक्ष्य से अधिक



क्षेत्र में की गई है। 23.46 लाख हेक्टेयर में चना बोया गया है जो गत वर्ष 21.08 लाख हेक्टेयर में बोया गया था। अन्य फसलों में अब तक मटर 2.79 लाख हेक्टेयर में, मसूर 7.93 लाख हेक्टेयर में बोवनी की गई है। राज्य में तिलहनों की बोवनी 15.29 लाख हेक्टेयर में हो गई है। इसमें सरसों की बोनी 14.03 लाख हेक्टेयर में हुई है। वहीं अलसी की बोवनी 1.26 लाख हेक्टेयर में हुई है। इस वर्ष गन्ने की बोवनी 1 लाख 12 हजार हेक्टेयर में हुई है।

जनवरी 2024 तक (लाख हे. में)

फसल	लक्ष्य	बोवनी
गेहूं	90.71	87.1
जौ	0.49	0.55
चना	22.35	23.46
मटर	2.75	2.79
मसूर	7.08	7.93
सरसों	14.06	14.03
अलसी	1.40	1.26
गन्ना	1.42	1.12

मध्य प्रदेश में 138 लाख हेक्टेयर में हुई रबी बोवनी

भोपाल। देश के किसान खेत में सीजन व महीने के हिसाब से अलग-अलग फसलों की खेती करते हैं, ताकि वह समय रहते अपनी खेती से अच्छी कमाई कर सकें। इसी क्रम में वर्तमान समय में उगाई जाने वाली सब्जियों की खेती की जानकारी दे रहे हैं, जिन्हें किसान इस समय में लगाकर अच्छा मोटा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।



किसान तोरई की खेती लगभग सभी प्रकार की मिट्टी की जा सकती है। इसके अलावा यह जल निकासी बैकटीरिया युक्त में भी बोई जा सकती है। तोरई की खेती के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। तोरई की खेती शुरू करने के लिए वर्तमान का समय सबसे अच्छा है जिसकी बाजार में भी काफी मांग है। बता दें कि तोरई के सूखे बीजों से भी तेल निकाला जा सकता है। इसके अलावा, फल में पानी की मात्रा अधिक होने के कारण यह कई स्वास्थ्य लाभों के लिए भी जानी जाती है।

यह एक बेल वाली कद्दूवर्गीय सब्जी है, जिसको बड़े खेतों के अलावा छोटी गृह वाटिका में भी उगाया जा सकता है। कद्दूवर्गीय फसलों में तोरई की खेती को लाभकारी खेती में माना जाता है और तोरई की खेती को व्यावसायिक फसल भी कहा जाता है। किसान अगर इसकी खेती वैज्ञानिक तरीके से करें तो इसकी फसल से अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। जिससे अच्छी कमाई की जा सकती है। तोरई की खेती पुरे भारत में की जाती है। इसकी खेती ग्रीष्म और वर्षा खरीफ दोनों ऋतुओं में की जाती है। इसकी खेती को नगदी के तौर पर व्यावसायिक फसल के रूप में किया जाता है। इसकी सब्जी की भारत में छोटे कस्बों से लेकर बड़े शहरों में बहुत मांग है क्योंकि यह अनेक प्रोटीनों के साथ खाने में भी स्वादिष्ट होती है। इस सब्जी की बाजारों में हमेशा मांग रहती है।

कैसा होना चाहिए मौसम और भूमि- किसान तोरई की खेती मानसून और गर्मी के इसकी खेती कर सकते हैं। तोरई को ठंड के मौसम में भी ज्यादा उगता है। इसकी रोपण अच्छी जल निकासी वाली भारी मध्यम मिट्टी में किया जाना चाहिए। तोरई की अच्छी फसल के लिए कार्बनिक पदार्थों से युक्त उपजाऊ मध्यम और भारी मिट्टी अच्छी मानी जाती है, जिसमें जल निकास की अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए।



कम लागत में ज्यादा कमाई देने वाली सब्जियों की खेती

तोरई की उन्नत किस्म

पूसा नन्दार: इस किस्म के फल एक समान लंबे और हरे रंग के होते हैं। यह किस्म 60 दिनों के बाद फूलती है। प्रत्येक विलो में 15 से 20 फल लगते हैं।
सीओ-1: यह एक हल्की किस्म है और फल 60 से 75 सेमी लंबे होते हैं। प्रत्येक विलो को 4 से 5 किलो फल की आवश्यकता होती है।

उर्वरक और पानी का सही उपयोग

तोरई की खेती करने से पहले मृदा एवं जल का परीक्षण किसानों को जरूर कर लेना चाहिए। मृदा परीक्षण से खेत में पोषक तत्वों की कमी का पता चल जाता है एवं किसान परीक्षण रिपोर्ट के हिसाब से खाद और उर्वरक का प्रयोग कर उचित पैदावार ले सकता है। रोपण के समय 20 किग्रा एन/हे 30 किग्रा पी एवं 30 किग्रा के प्रति हेक्टेयर डालें तथा 20 किग्रा एन की दूसरी खुराक फूल आने के समय डालें। साथ ही 20 से 30 किलो एन प्रति हेक्टेयर, 25 किलो पी और 25 किलो के रोपण के समय डालें। 25 से 30 किग्रा एन की दूसरी किश्त 1 माह में देनी होगी।

कीटों से बचाने का उपाय

तोरई की फसले मुख्य रूप से केवड़ा और भूरी रोगों से प्रभावित होती हैं। तोरई फसल को रोगों से बचाने और अच्छा उत्पादन पाने के लिए लिए इसके बीजों को बुवाई से पहले थाइरम नामक फंफुदनाशक 2 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित करना चाहिए। 1 लीटर पानी का छिड़काव करें और केवड़ा के नियंत्रण के लिए डायथीन जेड 78 हेक्टेयर में 10 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का छिड़काव करें।

करेला के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त

करेला की खेती भी किसान लगभग सभी तरह की मिट्टी में कर सकते हैं। लेकिन करेला की फसल से अच्छा उत्पादन पाने के लिए करेला की खेती अच्छी जल निकासी बैकटीरिया वाली दोमट मिट्टी इसकी अच्छी वृद्धि और उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है। करेला की फसल कम समय में तैयार हो जाती है, जिसे किसान बेचकर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। करेले की फसल बोवनी के बाद सिर्फ 60 से 70 दिन में तैयार हो जाती है। इसकी खेती मानसून और गर्मी के मौसम में होती है। इसके उत्पादन के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु अत्यधिक उपयुक्त होती है। इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर होता है। यह खनिज तत्वों से भरपूर होता है। इसमें पोटेशियम, जिंक, मैग्नेशियम, फास्फोरस, कैल्शियम, आयरन, कॉपर, मैंगनीज पाए जाते हैं। यानी उगाने वालों और खाने वालों दोनों के लिए यह फायदेमंद है।

कैसी होनी चाहिए जलवायु और मिट्टी

करेले की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी होती है। इसके अलावा नदी किनारे की जलोढ मिट्टी भी इसकी खेती के लिए उचित मानी जाती है। वहीं बात करें इसके लिए सही जलवायु की तो करेले की खेती के लिए गर्म वातावरण की आवश्यकता होती है। इसे बारिश के मौसम में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। करेले की खेती 25 से 35 डिग्री सेंटीग्रेड का तापमान अच्छा होता है।

उर्वरक और पानी का उचित उपयोग - करेले के बीज की बुवाई करने से 25-30 दिन पहले 25-30 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद को एक हेक्टेयर खेत में मिलाना चाहिए। 20 किग्रा एन/हेक्टेयर 30 किग्रा पी तथा 30 किग्रा के प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय डालें तथा 20 किग्रा एन की दूसरी खुराक फूल आने के समय डालें। साथ ही 20 से 30 किलो एन प्रति हेक्टेयर, 25 किलो पी और 25 किलो के रोपण के समय डालें। 25 से 30 किग्रा एन की दूसरी किश्त 1 माह में दी जानी चाहिए।

कब होती है इसकी खेती | लौकी की फसल

वर्ष में तीन बार उगाई जाती है। जायद, खरीफ, रबी सीजन में लौकी की फसल ली जाती है। जायद की बुवाई मध्य जनवरी, खरीफ मध्य जून से प्रथम जुलाई तक और रबी सितंबर अंत से अक्टूबर के पहले समाह तक लौकी की खेती की जाती है। जायद की अगेती बुवाई के लिए मध्य जनवरी में लौकी की नर्सरी की जाती है।

लौकी के पौधों में सिंचाई | लौकी के पौधों को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। यदि रोपाई बीज के रूप में की गयी है, तो बीज को अंकुरित होने तक नमी बनाए रखना

होता है। यदि रोपाई पौधों के रूप में की गयी है, तो पौधे रोपाई के तुरंत बाद खेत में पानी लगा देना चाहिए। बारिश के मौसम में जरूरत पड़ने पर पौधों की सिंचाई करनी चाहिए। बारिश के मौसम के बाद इसकी सप्ताह में एक बार सिंचाई करते रहना चाहिए। अधिक गर्मियों के मौसम में इन्हे सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है, इसलिए इन्हे 3 से 4 दिन के अंतराल में पानी देते रहना चाहिए। जिससे पौधों में नमी बनी रहे, और जब पौधों पर फल बनने लगे तब हल्की-हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए जिससे फल अधिक मात्रा में प्राप्त हो सके।



प्रसिद्ध किस्में और पैदावार

सीएच-1: यह किस्म पी ए यू लुधियाना द्वारा बनाई गई है। यह दरमियाने कद वाली किस्म है। इसका पत्त दरमियाने आकार और हल्के हरे रंग का होता है जो पकने के बाद गहरे लाल रंग का हो जाता है। इस किस्म का फल बहुत कड़वा और आकर्षित होता है। यह किस्म गलन रोग को सहने योग्य है। इसकी औसतन पैदावार 95-100 किंवटल प्रति एकड़ है।

सीएच-3: यह किस्म पंजाब खेतीबाड़ी यूनिवर्सिटी, लुधियाना द्वारा बनाई गई है। इसके फल का आकार सी एच-1 के आकार से बड़ा होता है। इसमें कैपसेसिन की मात्रा 0.52 फीसदी होती है। इसकी औसतन पैदावार 100-110 किंवटल एकड़ होती है।

सीएच-27: इस किस्म के पौधे लंबे होते हैं और ज्यादा समय तक फल देते हैं। इस किस्म के फल दरमियाने लंबे (6.7 सेमी.), पतले छिल्के वाले, शुरू में हल्के हरे और पकने के बाद लाल रंग के होते हैं। यह किस्म पत्ता मरोड़, फल और जड़ गलन, रस चूसने वाले कीट जैसे कि मकोड़ा जुएं आदि की रोधक है। इसकी औसतन पैदावार 90-110 किंवटल प्रति एकड़ होती है।

पंजाब सिंधूरी: इस किस्म के पौधे गहरे हरे, ठोस और दरमियाने कद के होते हैं। यह जल्दी पकने वाली किस्म है और इसकी पहली तुड़ाई पनीरी लगाने के 75 दिनों के बाद की जा सकती है। इसके फल लंबे (7-14 सेमी.), मोटे छिल्के वाले, शुरू में गहरे हरे और पकने के बाद गहरे लाल रंग के होते हैं। इसकी औसतन पैदावार 70-75 किंवटल प्रति एकड़ होती है।

पंजाब तेज: इसके पौधे हल्के हरे, फैले हुए और दरमियाने कद के होते हैं। यह जल्दी पकने वाली किस्म है और इसकी पहली तुड़ाई पनीरी लगाने के 75 दिन बाद की जा सकती है। इसके फल लंबे (6-8) सेमी., पतले छिल्के वाले, शुरू में हल्के हरे रंग के होते हैं जो पकने के बाद गहरे लाल रंग के हो जाते हैं। इसकी औसतन पैदावार 60 किंवटल प्रति एकड़ होती है।

पूसा ज्वाला: इस किस्म के पौधे छोटे कद के, झाड़ियों वाले और हल्के हरे रंग के होते हैं। इसके फल 9-10 सेमी. लंबे, हल्के हरे और बहुत कड़वे होते हैं। यह किस्म थिप और मकोड़ा जुओं की प्रतिरोधक है। इसकी औसतन पैदावार 34 किंवटल (हरी मिर्ची) और 7 किंवटल (सूखी मिर्ची) प्रति एकड़ होती है।

पूसा सदाबहार: इसके पौधे सीधे, सदाबहार (2-3 वर्षक), 60-80 सेमी. कद के होते हैं। इसके फल 6-8 सेमी. लंबे होते हैं। फल गुच्छों में लगते हैं और प्रत्येक गुच्छे में 6-14 फल होते हैं। पकने के समय फल गहरे लाल रंग के और कड़वे होते हैं। यह किस्म सीएम्वी, टीएम्वी और पत्ता मरोड़ की रोधक है। इसकी पहली तुड़ाई पनीरी लगाने के 75-80 दिन बाद की जा सकती है। इसकी औसतन पैदावार 38 किंवटल (हरी मिर्ची) और 8 किंवटल (सूखी मिर्ची) प्रति एकड़ है।

अर्का मेघना: यह हाइब्रिड किस्म अधिक पैदावार वाली और पत्तों के धब्बे रोग की प्रतिरोधक है। इसके फलों की लंबाई 10.6 सेमी. और चौड़ाई 1.2 सेमी. होती है। इसके फल शुरू में गहरे हरे और पकने के बाद लाल हो जाते हैं। इसकी औसतन पैदावार 134 किंवटल (हरी मिर्ची) और 20 किंवटल (सूखी मिर्ची) प्रति एकड़ है।

अर्का स्वैता: यह हाइब्रिड किस्म अधिक पैदावार वाली और ताजा मंडी में बेचनेयोग्य है। यह सिंचित स्थितियों में खरीफ और रबी दोनों में उगाई जा सकती है। इसके फल की लंबाई 11-12 सेमी. चौड़ाई 1.2-1.5 सेमी. होती है। इसके फल नर्म और दरमियाने कड़वे होते हैं। फल शुरू में हल्के हरे और पकने के बाद लाल हो जाते हैं। यह विषाणुओं को सहनेयोग्य किस्म है। इसकी औसतन पैदावार 132 किंवटल (हरी मिर्ची) और 20 किंवटल (सूखी मिर्ची) प्रति एकड़ है।

लौकी

लौकी की खेती एक बहुत ही अच्छी खेती है इसमें किसान को कम मेहनत में ज्यादा फायदा होता है। लौकी की खेती देश के किसान पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर मैदानी क्षेत्रों में आसानी से कर सकते हैं। लौकी की खेती के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। किसान लौकी की खेती कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। लौकी सामान्य तौर पर दो आकार की होती हैं, पहली गोल और दूसरी लंबी वाली, गोल वाली लौकी को पेठा तथा लंबी वाली लौकी को घीया के नाम से जाना जाता है।

कैसी होनी चाहिए भूमि | लौकी की खेती उचित जल निकासी वाली जगह पर किसी भी तरह की भूमि में की जा सकती है। किन्तु उचित जल धारण क्षमता वाली जीवाश्म युक्त हल्की दोमट भूमि इसकी सफल खेती के लिए सर्वोत्तम मानी गयी है। लौकी की खेती में भूमि का पी.एच मान 6 से 7 के मध्य होना चाहिए।

लौकी की अच्छी किस्में | अर्का नूतन, अर्का श्रेयस, पूसा संतुष्टि, पूसा संदेश, अर्का गंगा, अर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा हाइब्रिड 3, सम्राट, काशी बहार, काशी कुंडल, काशी कीर्ति एवं काशी गंगा आदि।

कृषि मशीनें, बोवनी-सिंचाई का बचाती हैं खर्च

खेती में काम आने वाली खास मशीन किसानों के लिए काफी फायदेमंद

मशीन गेहूं को सीधे खेत के अवशेषों के साथ ही बोवनी करने में सक्षम एक दिन में लगभग छह से आठ एकड़ में किसान कर सकते हैं बोवनी

भोपाल। जागत गांव हमार

मशीनों की मदद से खेती करने से किसानों को कई प्रकार के लाभ होते हैं। एक तो किसानों का समय बचता है। साथ ही पैसों की भी बचत होती है। इनमें से कुछ मशीनें ऐसी हैं जिनका प्रयोग पूरे साल खेती में किया जा सकता है। आइए जानते हैं उन मशीनों की क्या है खासियत और फायदे।

हैप्पी सीडर मशीन की खासियत

आधुनिक खेती में दिन-प्रतिदिन कृषि यंत्रों का महत्व बढ़ता जा रहा है। कृषि यंत्रों की मदद से किसान खेती के काम कम समय व कम लागत में पूर्ण कर सकते हैं। ये मशीन गेहूं को सीधे खेत के अवशेषों के साथ ही बोवनी कर सकती है। इस मशीन से फसलों की बोवनी करने पर सिंचाई में लगाने वाले पानी की बचत होती है। साथ ही धान की फसल की कटाई के बाद पराली प्रबंधन के लिए इस मशीन का इस्तेमाल किया जाता है।

हैप्पी सीडर मशीन खेत में पराली व फसल अवशेष बिना निकाले फसलों की सीधी बोवनी कर सकता है। हैप्पी सीडर मशीन में आगे की ओर रोटावेटर यूनिट लगी होती है, जिसकी मदद से पराली व फसल अवशेष को काटकर मिट्टी में मिला देता है, जो कि आगे चलकर खाद के रूप में परिवर्तित होकर मिट्टी की उर्वरक क्षमता को बढ़ाता है। हैप्पी सीडर मशीन में पीछे की ओर जीरो ट्रेलर लगा होता है, जो फसलों की बोवनी का काम करता है। हैप्पी सीडर मशीन में दो बॉक्स होते हैं, जिसमें खाद और बीज को अलग-अलग भरा जाता है। इस मशीन के माध्यम से एक दिन में लगभग 6 से 8 एकड़ में बोवनी की जा सकती है। कृषि यंत्र अनुदान योजना के तहत कृषि यंत्रों पर सब्सिडी दी जाती है। ये अलग-अलग राज्यों में वहां के नियमानुसार दी जाती है जो 50 प्रतिशत तक होती है। सब्सिडी की अधिक जानकारी के लिए आप अपने निकततम कृषि विभाग से संपर्क कर सकते हैं। यदि उनकी कृषि यंत्र अनुदान सूची में हैप्पी सीडर शामिल होगा तो आपको सब्सिडी का लाभ प्रदान किया जाएगा।



सुपर सीडर मशीन

सुपर सीडर प्रेस व्हील्स के साथ बुवाई और भूमि की तैयारी के संयुक्त अनुप्रयोग के लिए सबसे अच्छा अविष्कार है। यह प्रेस व्हील्स के साथ सीड प्लांटर और रोटर टिलर का कॉम्बिनेशन है। एग्रीकल्चर सुपर सीडर का काम विभिन्न प्रकार के बीज जैसे सोयाबीन, गेहूं, घास आदि को बोना है। इसके अलावा, इसका उपयोग कपास, केला, धान, गन्ना, मक्का आदि की जड़ों और टूट को हटाने के लिए किया जाता है। एग्रीकल्चर सुपर सीडर पराली जलाने पर रोक लगाकर खेती की मौजूदा जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। इसके अलावा, इसमें बीज की किस्मों को बदलने और बीज के कचरे को कम करने के लिए एक सीधी मीटरिंग प्रणाली है। आप इसे आसानी से इस्तेमाल कर सकते हैं, क्योंकि इसे इस्तेमाल करना आसान है। इसके अलावा, सुपर सीडर्स मशीन एक साथ खेती, बोवनी, मल्लिचंग और उर्वरक का छिड़काव आदि प्रदान करती है। सुपर सीडर एक ऐसी मशीन है जिसे खेतों में ट्रैक्टर के साथ जोड़कर इस्तेमाल किया जाता है। इस मशीन की मदद से किसानों को फसलों की निराई-गुड़ाई की समस्या से समाधान मिलता है। इसके अलावा ये मशीन धान और गेहूं की कटाई के बाद फसल अवशेषों को खेत में फैलाने के काम आती है। साथ ही किसानों को इसके इस्तेमाल से ये फायदा होता है कि मशीन की मदद से खेत में फैलाए अवशेष खाद में तब्दील हो जाते हैं और फसल की पैदावार में बढ़ोतरी होती है।



सुपर सीडर इम्प्लीमेंट्स के लाभ

- » सुपर सीडर एक मल्टी परपज फार्म इम्प्लीमेंट है, जो निम्नलिखित तरीकों से मदद करता है।
- » सुपर सीडर गेहूं, सोयाबीन, या घास के विभिन्न प्रकार के बीजों को लगाने में मदद करता है।
- » यह धान के पुआल की खेती में मदद करता है।
- » यह गन्ना, धान, मक्का, केला आदि फसलों की जड़ों और टूट को हटाता है।
- » यह चावल के भूसे को काटने और उठाने में मदद करता है, जमीन में गेहूं बोता है और बोवनी क्षेत्र में पलवार को फैलाने में मदद करता है।
- » यह अवशेषों को जलाने से रोकने और पर्यावरण की रक्षा करने का एक अद्वितीय समाधान है।
- » इस सीडर को चलाना और संभालना आसान है।
- » यह कल्टीवेशन, मल्लिचंग, बोवनी और उर्वरक को एक साथ फैलाने के कार्यों को एक साथ करता है।
- » सुपर सीडर पर्यावरण के अनुकूल है, क्योंकि यह पानी बचाने में मदद करता है और मिट्टी और जमीन को अधिकतम लाभ प्रदान करता है। यह धान के अवशेषों के साथ मल्लिचंग करने में मदद करता है। आवश्यकता के आधार पर इसका उपयोग जुताई के लिए भी किया जा सकता है। इन मशीनों के लिए कम निवेश की आवश्यकता होती है और किसानों के महत्वपूर्ण धन की बचत होती है। सुपर सीडर अल्टीमेट मॉडर्न फार्मिंग सॉल्यूशन है जो फसल अवशेषों को जलने से रोकता है। चूंकि यह एक बार में जुताई, बोवनी और सीडबेड कवरिंग के तीन कार्यों को करता है, इसलिए किसानों को अलग-अलग मशीनों में निवेश करने की आवश्यकता नहीं होती है। इससे उनके पैसे की बचत होती है और उनकी उत्पादन क्षमता में इजाजा होता है।

स्ट्रॉ बेलर मशीन

स्ट्रॉ बेलर एक ऐसी मशीन है जो पराली यानी अवशेषों को खेतों में इकट्ठा करके छोटे-छोटे गड्ढर बना देती है, जिससे किसानों को खेत में पराली जलाने की समस्या से समाधान मिलता है। साथ ही खेतों में मिट्टी सुरक्षित रहती है। ऐसे में पराली प्रबंधन के लिए स्ट्रॉ बेलर एक बेहतरीन मशीन है। कृषि बेलर मशीन एक ऐसी मशीन है जो फसल अवशेषों को एकत्र करती है और उसका एक बंडल बनाती है। आप इसका उपयोग धान, ज्वार, गेहूं, कपास, बाजरा आदि के फसल अवशेषों को इकट्ठा करने के लिए कर सकते हैं। यह एक पीटीओ संचालित मशीन है।



बेलर मशीन की कार्यप्रणाली

सबसे पहले, यह पिक-अप इकाइयों की मदद से फसल अवशेषों को उठाता है और फिर इसे रोलर्स के साथ रोल करके एक गठरी बनाता है। जैसे ही गठरी तैयार हो जाती है तो ड्राइवर ट्रैक्टर रोक देता है फिर गठरी को रस्सी से बांध देता है। बांधने से गांठों का आकार बना रहता है। अब आप सवाल कर सकते हैं कि ड्राइवर को कैसे पता चलता है कि गठरी बन गई है? इसका उत्तर यह है कि बेलर पर लगा एक बेल संकेतक ड्राइवरों को यह जानने की अनुमति देता है कि बेलर के

अंदर क्या हो रहा है। गठरी बनने के बाद, चालक के पास ट्रैक्टर के नियंत्रण बॉक्स में एक गठरी इजेक्शन स्विच होता है। जैसे ही ड्राइवर इजेक्शन स्विच दबाता है, बेलर दरवाजा खोल देता है और बेल बाहर निकल जाती है। इसके अलावा, आप कंट्रोल बॉक्स में एक बेल काउंटर भी देख सकते हैं। इससे आपको यह जानने में मदद मिलती है कि अब तक कितनी गांठें बनाई जा चुकी हैं। यह सब बेलर मशीनों के बारे में था। आइये जानते हैं गांठों के उपयोग के बारे में।

रोटावेटर/रोटरी टिलर

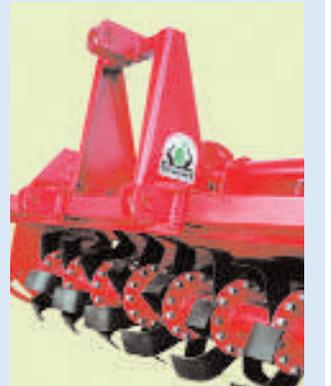
रोटावेटर को रोटरी टिलर के रूप में भी जाना जाता है। इसका मुख्य काम मिट्टी को तोड़ने और खोदने के लिए मशीन में लगी ब्लेड को घुमाया जाता है जिसे रोटोवेटर कहा जाता है। रोटोवेटर मोटर वाहन या ट्रैक्टर के पीछे लगाया जाता है।

- » रोटोवेटर को किसी भी प्रकार की मिट्टी की जुताई में प्रयोग किया जा सकता है।
- » रोटोवेटर को मिट्टी की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार समायोजित किया जा सकता है।
- » रोटोवेटर का उपयोग किसी भी फसल के लिए विशेष रूप से उथल-पुथल के लिए किया जा सकता है चाहे

- फसल गन्ना, कपास, केला और ज्वार आदि ही ना हो।
- » रोटोवेटर के उपयोग में अन्य यंत्रों की अपेक्षा 15 से 35 फीसदी तक ईंधन की बचत हो जाती है।
- » रोटोवेटर मिट्टी को तुरंत तैयार कर देता है जिससे पिछली फसल की मिट्टी की नमी का पूर्णतया उपयोग हो जाता है।
- » रोटोवेटर गीले क्षेत्रों में भी

- आसानी और कुसलता से कार्य कर सकता है।
- » रोटोवेटर शुष्क और गीली भूमि में खेती करने के लिए भी उपयुक्त है।
- » रोटोवेटर का उपयोग 125 मिमी -1500 मिमी की गहराई तक की मिट्टी के जुताई के लिए उपयुक्त है।
- » रोटोवेटर से बीज की बोवनी में जल्दी होती है।
- » रोटोवेटर के उपयोग में

- अन्य जुताई के यंत्रों की अपेक्षा काम समय लगता है।
- » रोटोवेटर का उपयोग फसलों के अवशेषों को हटाने में भी किया जाता है।
- » रोटोवेटर को खेतों में किसी भी मोड़ पर घुमाया जा सकता है।
- » मिट्टी को तोड़ने के लिए भारत में सबसे प्रचलित और लोकप्रिय रोटोवेटर।



हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न सम्मान



डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, लहार (भिंड) मप्र

1960 के दशक तक भारत में भुखमरी के हालात थे। वर्ष 1965 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को देशवासियों से एक समय का खाना छोड़ने तक की अपील करनी पड़ी थी। भारत का एक लाल जिसे हरित क्रांति के जनक मनुकोम्बु सबासिवन यानी एमएस स्वामीनाथन के नाम से जाना जाता है, ने भारत की भुखमरी मिटाने का दृढ़ निश्चय कर लिया गया था।

एमएस स्वामीनाथन ने उन्नत अनुवांशिक बीजों के जरिए गेहूँ और चावल का उत्पादन बढ़ाकर देश को न सिर्फ भयाव्य हालात से बाहर निकाला, बल्कि देश को अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने की बुनियाद रख दी गई।

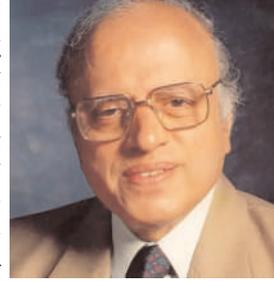
7 अगस्त 1925 को तमिलनाडु के कुंभकोणम में सर्जन एमके सम्बासिवन और पार्वती थंगम्मल के घर जन्मे स्वामीनाथन के दिलों दिमाग पर 1943 में बंगाल में पड़े भीषण अकाल का गहरा प्रभाव पड़ा था। इस अकाल के चलते उस समय करीब 40 लाख लोग मारे गए थे। इसी का प्रभाव था कि स्वामीनाथन ने अन्न की कमी कैसे दूर की जाए इस पर गंभीरता से विचार किया और कृषि विज्ञान से स्नातक करने के बाद 1947 में अनुवांशिकी और पादप प्रजनन के अध्ययन के लिए दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान से साइटोजेनेटिक्स में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद वह अनुवांशिकी में शोध के लिए यूनेस्को फेलोशिप में चयन होने के बाद नीदरलैंड चले गए। इसके बाद में उन्होंने केंब्रिज विश्वविद्यालय से 1952 में पीएचडी की उपाधि पूरी की। वर्ष 1954 में स्वामीनाथन भारत लौट आए और केंद्रीय धान अनुसंधान संस्थान में काम करने लगे।

डॉ. स्वामीनाथन ने अमेरिकी वैज्ञानिक नॉर्मन बारलॉग के साथ गेहूँ की आनुवांशिक रूप से उन्नत प्रजातियों पर काम किया। उन्होंने भारत में मेक्सिको के बोनी गेहूँ की प्रजातियों को जापानी गेहूँ की प्रजातियों के साथ मिलाकर मिश्रित बीज तैयार किया गया। क्षेत्र परीक्षणों के दौरान इस बीज से उत्पादकता में अच्छी खासी बढ़ोतरी प्राप्त हुई। लेकिन इस अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए उनके सामने बजट की कमी आ रही थी। देश में जब 1964 में अकाल की स्थिति बनी तो सरकार द्वारा उन्हें फंड दिया गया। इसके बाद प्राप्त नतीजों को जब सरकार और किसानों ने देखा तो सब की आँखें खुली की खुली रह गईं। तदुपरांत स्वामीनाथन ने इन बीजों में भारत की परिस्थितियों के लिहाज से और कई

बदलाव किए गए। इन बीजों की बढौलत 1968 में देश में गेहूँ के उत्पादन में 50 लाख टन की वृद्धि हुई। इसके बाद इन बीजों का व्यापक इस्तेमाल शुरू हुआ और देश में भुखमरी की स्थिति खत्म हो गई।

निश्चित तौर पर डॉक्टर स्वामीनाथन को भारत रत्न सम्मान उनके द्वारा देश में हरित क्रांति जैसे अभूतपूर्व कार्य को अंजाम देने के लिए दिया गया है। यह सम्मान भारत में खाद्य संकट को खत्म करने के लिए सन 1960 के दशक में देश में हरित क्रांति लाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देता है। यह स्वामीनाथन की ही रणनीति थी कि जिसकी बढौलत भारत में कृषि उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई। अमेरिकी कृषि वैज्ञानिक नॉर्मन बारलॉग के सहयोग से बतौर वैज्ञानिक उनके काम के परिणाम स्वरूप पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों को उच्च उपज की किस्म वाले बीज, पर्याप्त सिंचाई सुविधा और उर्वरक उपलब्ध कराए गए। परिणाम स्वरूप आज देश खाद्यान्न के मामले में पूर्णतया आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि सर प्लस की श्रेणी में आ गया है।

डॉक्टर स्वामीनाथन देश के कई प्रतिष्ठित संस्थानों में भी कार्यरत रहे हैं। वर्ष 1961-72 के दौरान वह भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक वह महानिदेशक भी रह चुके हैं। इसके बाद वह 1972-79 तक कृषि अनुसंधान संस्थान व शिक्षा विभाग के सचिव रहे हैं। वर्ष 1979-80 तक कृषि मंत्रालय के प्रधान सचिव के पद पर कार्य कर चुके हैं। इसके साथ ही वह 2004 से 2006 के बीच राष्ट्रीय किसान आयोग के अध्यक्ष के रूप में भी कार्यरत रहे हैं। किसान



आयोग के अध्यक्ष के रूप में रहते हुए उन्होंने सिफारिश की थी किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) फसल पर आने वाली लागत से कम से कम 50 फीसदी ज्यादा मिलना चाहिए। डॉ. स्वामीनाथन को अपने जीवनकाल में डाक्टरेट की 84 मानद उपाधियां मिली हैं। जिसमें 25 अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की तरफ से दी गई।

डॉ. स्वामीनाथन को भारत रत्न से पहले 1989 में पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष 1971 में मैग्सेसे, 1986 में अल्बर्ट आइंस्टीन वर्ल्ड साइंस पुरस्कार, 1987 में पहला विश्व खाद्य पुरस्कार, 1991 में अमेरिका में टाइलर पुरस्कार, 1994 में पर्यावरण तकनीकी के लिए जापान का होंडा पुरस्कार, 1997 में फ्रांस का ऑर्डर दु मेरिट एग्रीकॉल, 1998 में मिसुरी बाटेनिकल गार्डन का हेनरी शां पदक, 1999 में वाल्वो इंटरनेशनल एनवायरनमेंट पुरस्कार और यूनेस्को गांधी स्वर्ण पदक से नवाजा जा चुका है। अमेरिका के विश्व प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक नॉर्मन बारलॉग ने 1970 में शांति का नोबेल पुरस्कार जीतने से पहले स्वामीनाथन को एक पत्र लिखा था। जिसमें उन्होंने कहा था कि हरित क्रांति एक सामूहिक प्रयास का ही प्रणाम थी। क्योंकि मैक्सिकन बीजों के संभावित मूल्य को सबसे पहले पहचानने का श्रेय आपको ही जाना चाहिए डॉ. स्वामीनाथन। अगर आप ऐसा नहीं करते तो शायद एशिया में कभी भी हरित क्रांति हो ही नहीं पाती। इससे यह सिद्ध होता है कि डॉ. स्वामीनाथन जैसा व्यक्तित्व भारत के कृषि जगत में युगो युगांतर तक याद रखा जाएगा। आज डॉ. स्वामीनाथन जी हमारे बीच में नहीं हैं परंतु उनके द्वारा जो कार्य देश के लिए किया गया है निश्चित तौर से भारत की जनता और किसानों के लिए इससे बड़ा वरदान कोई और दूसरा हो नहीं सकता। भारत सरकार द्वारा उन्हें भारत रत्न देने की घोषणा से भारत के संपूर्ण कृषि वैज्ञानिकों से लेकर देश के किसान अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

सिंथेटिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने में सहायक हैं दालें

विश्व दलहन दिवस हर साल 10 फरवरी को मनाया जाता है। यह संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2018 में दालों के महत्व और पोषण संबंधी लाभों को पहचानने के लिए नामित एक वैश्विक वार्षिक कार्यक्रम है। इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि दालें न केवल पोषक हैं, वे विश्व की भूख और गरीबी को मिटाने की दिशा में स्थायी खाद्य प्रणालियों के विकास में भी योगदान दे सकती हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, यह सतत विकास के लिए अपने 2030 एजेंडा को हासिल करने के लिए एक प्रभावी रणनीति है, जिसका उद्देश्य वैश्विक शांति को मजबूत करना और खाद्य सुरक्षा को बढ़ाना है। दलहन-फलियां के रूप में भी जाना जाता है- फली वाले पौधों के खाद्य बीजों से संबंधित है।

दालों में भोजन के लिए उगाए जाने वाले फलीदार पौधों के सूखे बीज शामिल होते हैं और इसमें हरी सब्जियों की फसल को शामिल नहीं किया जाता है। उनके बीज फाइबर, प्रोटीन, विटामिन और खनिजों जैसे आवश्यक पोषक तत्वों से भरे होते हैं, जो उन्हें महत्वपूर्ण और स्वस्थ सुपरफूड बनाते हैं। इन पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य फसलों के महत्व का सम्मान करने के लिए, संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने 20 दिसंबर, 2013 को एक विशेष संकल्प (ए/आरईएस /68/231) को अपनाया और 2016 को दलहन के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष (आईवाईपी) के रूप में घोषित किया। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ने 2016 में उत्सव का नेतृत्व किया और इस आयोजन ने दालों के पोषण और पर्यावरणीय लाभों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता को सफलतापूर्वक बढ़ाया। आईवाईपी की सफलता और गति पर निर्माण और सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा को आगे हासिल करने के लिए दालों की क्षमता को पहचानते हुए, बुर्किना फासो, एक लैंडलॉक पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्र, ने विश्व दलहन दिवस के वैश्विक पालन का प्रस्ताव रखा। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, गरीबी, खाद्य सुरक्षा और पोषण, मानव स्वास्थ्य और मिट्टी के स्वास्थ्य की वैश्विक चुनौतियों को कम करने में दालें प्रभावशाली बनी हुई हैं।

खाद्य सुरक्षा: किसानों के लिए, दालें एक महत्वपूर्ण फसल हैं क्योंकि वे उन्हें बेच और खा सकते हैं, जिससे किसानों को घरेलू खाद्य सुरक्षा बनाए रखने और आर्थिक स्थिरता बनाने में मदद मिलती है। पर्यावरणीय लाभ: दालों के नाइट्रोजन-स्थिरीकरण गुण मिट्टी की उर्वरता में सुधार करते हैं, जो खेत की उत्पादकता को बढ़ाते हैं। इंटरक्रॉपिंग और कवर फसलों के लिए दालों का उपयोग करके, हानिकारक कीटों और बीमारियों को दूर रखते हुए, किसान खेत और मिट्टी की जैव विविधता को भी बढ़ावा दे सकते हैं। इसके अलावा, मिट्टी में कृत्रिम रूप से नाइट्रोजन डालने के लिए उपयोग किए जाने वाले सिंथेटिक उर्वरकों पर निर्भरता को कम करके दालें जलवायु परिवर्तन शमन में योगदान दे सकती हैं। इन उर्वरकों के निर्माण और प्रयोग के दौरान ग्रीनहाउस गैसों निकलती हैं और इनका अत्यधिक उपयोग पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकता है। दालें अत्यधिक पानी कुशल हैं, एक किलो दाल के उत्पादन के लिए 1250

लीटर पानी की जरूरत होती है, जबकि एक किलो बीफ के लिए 13,000 लीटर पानी की जरूरत होती है।

विश्व दलहन दिवस 2023 थीम: विश्व दलहन दिवस 2023 की थीम एक सतत भविष्य के लिए दलहन है।

किस दाल में कितना प्रोटीन: अरहर की दाल अरहर की दाल को तुअर की दाल भी कहा जाता है। ये दाल खाने में काफी स्वादिष्ट होती है। 100 ग्राम पकी हुई अरहर की दाल में करीब 5.92 ग्राम प्रोटीन पाया जाता है। इसके साथ ही इसमें कैल्शियम, पोटैशियम, विटामिन ए, विटामिन सी, शुगर, फाइबर जैसे पोषक तत्व भी पाए जाते हैं।

चने की दाल: चने की दाल को प्रोटीन के साथ फाइबर से भी भरपूर माना जाता है। 100 ग्राम चने की दाल में करीब 13 फीसदी प्रोटीन पाया जाता है। चने का इस्तेमाल खाने में कई तरह से किया जाता है। लोग चने को स्प्राउट्स के तौर पर खाते हैं, चने को बेसन के तौर पर इस्तेमाल करते हैं, चने की दाल बनाते हैं।

उड़द दाल: दाल और चावल हर घर में सभी खाते हैं। उड़द की दाल आपके शरीर में प्रोटीन, पोटेशियम और विटामिन ए की पूर्ति करती है। 100 ग्राम उड़द की दाल में करीब 25 फीसदी प्रोटीन होता है।

मूंग दाल: अगर आप अपने आहार में हरे चने की दाल या मूंग दाल को शामिल करते हैं तो आपको कई तत्व एक साथ मिलते हैं। मूंग की दाल में सबसे ज्यादा प्रोटीन पाया जाता है यही वजह है कि जो लोग वजन कम करना चाहते हैं उन्हें मूंग दाल खाने की सलाह दी जाती है। अगर प्रोटीन की बात करें तो 100 ग्राम मूंग की दाल में 9 ग्राम प्रोटीन पाया जाता है।

मसूर की दाल: मसूर की दाल छिलके वाली और बिना छिलके वाली, दोनों तरह से खायी जाती है। इसे भी लोग बड़े स्वाद से खाते हैं। 100 ग्राम मसूर की दाल में करीब 9 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है।

मिक्स दाल: इस बात में कोई दो राय नहीं है कि दाल खाने के स्वाद में चार चांद लगा देती है और दालों में मिलने वाला प्रोटीन सेहत को बेहतर बनाने में मदद करता है। ऐसे में आप मिक्स दाल को भी अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं। इसमें आप अरहर, उड़द चना, मूंग और मसूर की दाल मिक्स करके बना सकते हैं। स्वाद के साथ-साथ आपको अच्छी सेहत भी मिलेगी।

विश्व दलहन दिवस



सोलर दीदी को सशक्त बनाने की कवायद के मायने

सौर पैनल से प्रत्येक सोलर दीदी को 2,000 रुपये से अधिक की मासिक आमदनी होगी और इसके साथ-साथ उन्हें 100 यूनिट मुफ्त बिजली भी मिलेगी। ग्रामीण क्षेत्रों में लगाए जाने वाले सौर पैनलों के निर्माण, उसे लगाने और उससे जुड़ी सेवाएं देने वाली कंपनियों के साथ-साथ लाखों लोगों को रोजगार देने वाला एक संपूर्ण तंत्र तैयार किया जाएगा। भारत में कई ऐसे राज्य हैं जो कोयले की अर्थव्यवस्था पर निर्भर हैं। ऐसे में अगर हम शून्य कार्बन उत्सर्जन की व्यवस्था को अपनाने की दिशा में आगे बढ़ते हैं तब इन राज्यों पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। इन राज्यों के ग्रामीण परिवार मुश्किल से अपना जीवन-यापन कर पाते हैं और वे सीधे या परोक्ष रूप से कोयला खनन से मिलने वाली आय पर निर्भर हैं। कई किसानों के पास सिंचाई की सुविधा वाले खेत भी नहीं होते हैं और ऐसे में उन्हें अपनी आजीविका के लिए गैर-कृषि आमदनी पर निर्भर होना पड़ता है। गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले अधिकांश समुदायों के पास अपना कोई खेत नहीं है और वे ग्रामीण क्षेत्र के मजदूरों के रूप में काम करते हैं या पारंपरिक शिल्पों के जरिये अपनी आजीविका जुटाते हैं। ग्रामीण महिलाओं को अपनी घरेलू खेती से होने वाली आमदनी के अलावा भी बकरी और गाय पालने, देसी शराब बेचने और बांस की टोकरियों जैसे हस्तशिल्प तैयार करने जैसी विभिन्न गतिविधियों में जुटे रहना पड़ता है ताकि आजीविका को भरपाई हो सके। निरंतर श्रम करने के बावजूद, झारखंड जैसे राज्यों में औसत ग्रामीण घरेलू आय लगभग 6,000-7,000 रुपये प्रति माह है। ग्रामीण क्षेत्रों की गरीबी कम करने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की आमदनी बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं। महिलाओं को पारंपरिक कपड़े, आभूषण बनाने, मशरूम या अन्य विदेशी सब्जियों की खेती करने के लिए सहकारी समितियों में नामांकित कराया गया है। दुर्भाग्य से इनका ताल्लुक सीधे बाजार से नहीं हो पाता है, इसलिए ऐसे उत्पाद तैयार करना मुश्किल होता है जिनकी लगातार बिक्री हो सकती है। नतीजतन, इन कार्यक्रमों के तहत एक स्थिर मासिक आमदनी देना मुश्किल हो जाता है। इसीलिए, राज्य सरकारों ने सीधी नकद सहायता देनी शुरू कर दी है जैसे कि मध्य प्रदेश में 'लाइली बहना योजना' के तहत प्रति माह 1,250 रुपये का भुगतान किया जाता है। सोलर दीदी योजना इन समस्याओं का समाधान करेगी। राशन कार्ड रखने वाला प्रत्येक ग्रामीण परिवार इस योजना का लाभ पाने का पात्र होगा। सौर पैनल का स्वामित्व महिलाओं के पास होगा और इससे होने वाली कुल आमदनी सीधे उनके बैंक खातों में जमा की जाएगी।

भिंडा जिले के 32 साल के एक इंजीनियर लारखों का पैकेज छोड़ खेती कर रहे हैं। वे 4 बीघा में मेडिसिनल प्लांट और हॉर्टिकल्चर की जॉइंट खेती से हर साल 7 से 8 लाख तक की कमाई कर रहे हैं।

किसानों की सुसाइड स्टडी पढ़कर लिया फैसला

8 लाख सालाना कमा रहा भिंड का किसान



नवाचार : मल्टीनेशनल कंपनी की नौकरी छोड़ खेती चुनी

जागत गांव हमार अपने इस अंक में किसानों को मिलवा रहा है कि भिंड के दबोहा गांव में रहने वाले धर्मेन्द्र शर्मा से। धर्मेन्द्र के पिता रिटायर्ड प्रिंसिपल हैं। धर्मेन्द्र ने 2013 में ग्वालियर के एनआरआई कॉलेज से बीई की पढ़ाई की। डिग्री लेने के बाद कॉलेज से ही साढ़े 4 लाख रुपए के पैकेज पर एक मल्टीनेशनल कंपनी में सिलेक्शन हो गया, लेकिन उन्होंने जॉइन नहीं किया, क्योंकि धर्मेन्द्र ने भारत में किसानों की आत्महत्या की स्टडी रिपोर्ट पढ़ने के बाद खेती-किसानी का मन बना लिया था।

धर्मेन्द्र से जानते हैं मेडिसिनल प्लांट और हॉर्टिकल्चर की खेती शुरू करने की कहानी

मैंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान किसानों की आत्महत्या पर प्रकाशित एक स्टडी रिपोर्ट पढ़ी, जिसमें लिखा था कि खेती-किसानी में नुकसान होने के चलते हर साल इंडिया में 12 हजार से ज्यादा किसान सुसाइड कर लेते हैं। हर रॉ मटेरियल खेती-किसानी से ही इंडस्ट्रीज को मिलता है। किसान फिर भी आत्महत्या करने को मजबूर हैं। मेरे दिमाग में ऐसे कई सवाल चल रहे थे। इन सब सवालों को मुझे जमीनी स्तर पर जानना था और करियर में भी कुछ अलग करना था, इसलिए मैंने सोचा क्यों ना मेडिसिनल प्लांट और हॉर्टिकल्चर की जॉइंट खेती की जाए। फिर मैंने अपने खेतों को मेडिसिनल प्लांट और हॉर्टिकल्चर के लिए तैयार करना शुरू किया। पहले 3 से 4 साल तक तो नुकसान होता रहा। फिर मैंने अलग-अलग क्रॉप पर अध्ययन किया और नए-नए प्रयोग के साथ खेती करना शुरू किया। इसके बाद मुझे खेती में मुनाफा होने लगा। आज मेरे पास करीब एक बीघा में सिर्फ नर्सरी है, जिसमें 20 वैरायटी के अमरूद, 15 वैरायटी के अलग-अलग देशी-विदेशी आम के पौधे लगे हैं। इसके अलावा पपीता, अनार, अनानास, बांस, एप्पल, बेर समेत दूसरे हॉर्टिकल्चर क्रॉप हैं। मेरे पास कुल 9 बीघा जमीन है।

पहले मैंने पपीते के साथ हल्दी और सफेद मूसली की खेती की। फिर बाद में 4 बीघा जमीन में तुलसी की खेती की। इस तरह अलग-अलग मौसम के मुताबिक अलग-अलग खेती कर रहा हूँ। इस बार खेत में 700 से ज्यादा केले की पौधे लगाए हैं। केले के पौधे के बीच में ही टमाटर की फसल लगाई है। केले की फसल आने से पहले दो से तीन सब्जी की फसल से 4 से 5 लाख रुपए का मुनाफा हो जाएगा। जब 12 महीने बाद केला फल देगा तो यह बोनास के तौर पर फायदा देकर जाएगा। किसान का अनुमान है कि केले की फसल से 4 से 5 लाख रुपए का फायदा होगा। इसके अलावा सफेद मूसली और तुलसी की खेती भी कर रहा हूँ।



अपने ड्रीम के बारे में चर्चा करते हुए बताते हैं कि मैं देश के अलग-अलग क्षेत्रों में जाकर वहां पर उगाई जाने वाली फसलों की जानकारी लेना चाहता हूँ। इन फसलों को भिंड में भी उगाऊंगा।

किसानों के लिए बने आइडियल

युवा किसान धर्मेन्द्र शर्मा भिंड जिले के किसानों के लिए आइडियल बन चुके हैं। एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट के अफसर जब लोगों से मेडिसिनल प्लांट और हॉर्टिकल्चर क्रॉप को लेकर चर्चा करते हैं तो वह आइडियल किसान के तौर पर धर्मेन्द्र शर्मा को बुलाते हैं। एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट की ओर से धर्मेन्द्र कई बार सम्मानित हो चुके हैं।

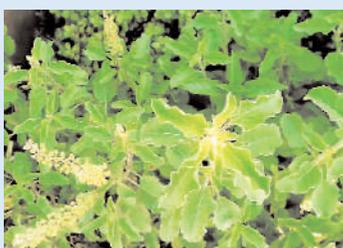
कैसे करें सफेद मूसली की खेती

सफेद मूसली की खेती मई के आखिरी सप्ताह से लेकर मध्य जून तक होती है। खेती के लिए भूमि की अच्छी गहरी जुताई करके पूरे खेत में पाटा चला लें। उसके बाद क्यारियां बना लें। साथ ही खेत में जल निकासी के लिए ढलान की व्यवस्था करें। उसके बाद पौधे की रोपाई करें। पौधे की अच्छी वृद्धि और विकास के लिए करीब 15 टन गोबर की खाद डालें।

क्वलिटी होने पर हाथों हाथ बिकती है फसल

सफेद मूसली, हल्दी और तुलसी जैसी मेडिसिनल प्लांट क्रॉप को देश में बहुत मांग है। भिंड शहर से सबसे नजदीक का बड़ा मार्केट दिल्ली है। क्रॉप की सही क्वालिटी होने पर फसल के अच्छे दाम मिलते हैं, लेकिन हमारे क्षेत्र के जिन किसानों ने उत्पादन किया है। वह क्वालिटी बेस नहीं दे पाए। इसके चलते अब तक फेल होते रहे हैं। मैं पिछले 10 सालों से सफेद मूसली और हल्दी की खेती कर रहा हूँ और मुनाफा भी कमा रहा हूँ।

तुलसी की खेती



बलुई दोमट मिट्टी तुलसी की खेती के लिए अच्छी मानी जाती है। इसकी खेती जून-जुलाई माह में शुरू कर सकते हैं। जून-जुलाई में बीजों के माध्यम से नर्सरी की तैयारी की जाती है। जब तुलसी की नर्सरी तैयार हो जाती है तो इसकी रोपाई की जाती है। इसके लिए दो लाइन के बीच लगभग 60 सेंटीमीटर का गैप रखा जाता है। वहीं, पौधों की दूरी 30 सेंटीमीटर के करीब होती है। यह खेती 100 दिनों में तैयार हो जाती है। इसके बाद कटाई की प्रक्रिया शुरू की जाती है।

हल्दी की खेती



हल्दी की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है। एक एकड़ में हल्दी की खेती के लिए करीब 6 क्विंटल बीज की जरूरत होती है। जिसे बाग या छायादार जगहों पर बोया जाता है। हल्दी की बुवाई का सबसे सही समय अप्रैल से 15 जून तक होता है। इसकी बोवनी के लिए दो लाइनों के बीच की दूरी 30-40 सेंटीमीटर और पौध से पौध की दूरी 20 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। जबकि 4-5 सेंटीमीटर गहराई में बोवनी करनी चाहिए।



पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय के छात्रों ने लिया उन्नत खेती के अनुभव

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय के छात्रों ने लिया उन्नत खेती के अनुभव

जागत गांव हमार, नरसिंहपुर।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नरसिंहपुर में शैक्षणिक भ्रमण पर आए पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, नरसिंहपुर के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों ने केंद्र में स्थापित विभिन्न इकाईयों केंचुआ खाद, एजोला, पुष्प इकाई, नर्सरी, फसल संग्रहालय, कृषि बीज उत्पादन प्रक्षेत्र, मशरूम उत्पादन इकाई, प्राकृतिक खेती इकाई आदि का भ्रमण किया। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. विशाल मेश्राम, डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव, वैज्ञानिक (कृषि अभियांत्रिकी), डॉ. निधि वर्मा, वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) द्वारा उन्नत कृषि की विभिन्न विधाओं से छात्रों का परिचय करवाया गया। फसल संग्रहालय का मुख्य उद्देश्य प्रसार के सिद्धांत 'देख कर सीखना' को साकार करना है। कृषक केंद्र में आकर इन किस्मों के प्रदर्शन को देखकर अनुभव प्राप्त करते हैं कि जिले के अनुकूल कौन सी किस्म बेहतर उत्पादन भविष्य में खेतों पर प्रदाय कर सकती है वर्तमान में रासायनिक खेती के दुष्परिणाम को कम करने का एकमात्र विकल्प जैविक एवं प्राकृतिक खेती है अतः केंद्र में जैविक एवं प्राकृतिक खेती के महत्व को बताने हेतु इन इकाईयों की स्थापना की गयी है।

जीवामृत, नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र आदि खेत पर बनाना बताया

प्राकृतिक खेती के अंतर्गत जीवामृत, घन जीवामृत, नीमास्त्र, ब्रम्हास्त्र, अग्निस्त्र आदि खेत पर बनाने की विधि का सचित्र एवं प्रायोगिक प्रदर्शन किया गया है जैविक खेती के अंतर्गत नाडेप, केंचुआ खाद बनाने का प्रशिक्षण छात्रों को प्रदाय किया गया। केंद्रीय विद्यालय से आए अधिक संख्या में छात्र-छात्राओं केंद्र द्वारा वर्ष 2023-24 में गेहूँ, चना, मसूर के प्रजनक बीजोत्पादन से परिचय करवाते हुए बताया गया कि गेहूँ की उन्नत किस्म जे.डब्ल्यू. 322 चने की जे.जी. 24, जे.जी. 36 आदि का उत्पादन लिया जा रहा है, जिससे भविष्य में जिले एवं प्रदेश के कृषकों की बीज मांग की पूर्ति की जा सके, छात्रों को किस प्रकार कृषि को रोजगार का जरिया बनाया जा सकता है इसकी जानकारी रोचक तरीके से केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रदाय की गयी। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. विशाल मेश्राम (कृषि विस्तार)

द्वारा कृषि की उन्नत तकनीक को संचार माध्यम जैसे - विभिन्न संचार पुस्तिका, बीजों के किस्मों का संग्रह, सीडहब इकाई की जानकारी प्रदान की, डॉ. निधि वर्मा वैज्ञानिक, (सस्य विज्ञान) द्वारा फसल संग्रहालय में रबी मौसम की फसलों मुख्यतः मसूर, चना, सरसों, गेहूँ आदि की उन्नत किस्मों की जानकारी प्रदान की गई साथ ही पोषण वाटिका एवं केंचुआ खाद प्रदर्शन इकाई का भ्रमण एवं उसकी उपयोगिता की जानकारी दी, डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव, वैज्ञानिक (कृषि अभियांत्रिकी) द्वारा उन्नत कृषि यंत्रों की जानकारी एवं महत्व के बारे में बताया। उपरोक्त भ्रमण कार्यक्रम केंद्रीय विद्यालय के प्राचार्य अरूण कुमार तुमसरे, शिक्षकगण दीपक मारावी, आलोक कुमार, सी.एम. मीणा, कु. मोनिका, कु. निवेदिता द्वारा करवाया गया। बच्चे कल का भविष्य है इसलिये ऐसे भ्रमण समय की आवश्यकता है।

सब्सिडी पर कृषि यंत्र स्टॉरीपर के लिए आवेदन

जागत गांव हमार, इंदौर।

संचालनालय कृषि अभियांत्रिकी, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल द्वारा 09 फरवरी 2024 दोपहर 12 बजे से 15 फरवरी 2024 तक कृषि यंत्र स्टॉरीपर के लिए पोर्टल पर आवेदन आमंत्रित किये जा रहे हैं। इच्छुक कृषक आवेदन करने हेतु निर्धारित धरोहर राशि रु.10,000/- का भुगतान Online Payment Gateway के माध्यम से कर ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। प्राप्त आवेदनों के विरुद्ध दिनांक 20 फरवरी 2024 को लॉटरी संपादित

की जावेगी।

नोट- पोर्टल पर लॉटरी उपरांत जिन आवेदकों के नाम कंफर्म या प्रतीक्षा सूची में होंगे उनकी धरोहर राशि प्रकरण के अंतिम निराकरण पश्चात ही रिफंड की जाएगी एवं जिन आवेदकों का चयन लॉटरी में नहीं होगा उनकी धरोहर राशि तत्काल रिफंड की जायेगी। वहीं पोर्टल पर ऐसे आवेदन जिन पर लॉटरी दिनांक से पूर्व धरोहर राशि के भुगतान की पुष्टीकरण बैंक स्तर से प्राप्त नहीं होती है तो ऐसे आवेदन पर कोई भी विचार नहीं किया जावेगा।

प्राकृतिक खेती के गेहूं प्रदर्शनों का वैज्ञानिकों द्वारा भ्रमण

जागत गांव हमार, टीकमगढ़।

कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार, डॉ. यू.एस. धाकड़ एवं डॉ. एस.के. सिंह वैज्ञानिकों द्वारा विगत दिवस ग्राम डोर एवं कुराई में किसानों के खेतों पर प्राकृतिक खेती के प्रदर्शन गेहूं फसलों का किसानों के साथ भ्रमण कर उन्हें तकनीकी सलाह दी गयी। केंद्र द्वारा रबी में गेहूं की फसल पर 8 प्राकृतिक खेती पर प्रदर्शन विभिन्न ग्रामों में किसानों के खेतों पर डाले गये। वैज्ञानिकों द्वारा प्राकृतिक खेती अंतर्गत बीजामृत घोल से बीज का उपचार कराया, जिससे बीज का अंकुरण अच्छा हो और फफूंदजनित रोगों से बचाव हो सके। फसल की बुवाई के पहले सूखा घन जीवामृत को खेत में फैलाकर डाला गया, जो फसल की उत्पादकता को बढ़ाने और फसल को सुरक्षित रखने में उपयोगी होता है साथ ही जल की आवश्यकता को नियंत्रित करता है

साथ ही गेहूं प्रदर्शन में खड़ी फसल में जीवामृत घोल का पहला छिड़काव 30 दिन बाद 150 ली. पानी में 5 ली. जीवामृत मिलकर एक एकड़ में स्प्रेयर पम्प से छिड़काव किया और दूसरा-तीसरा छिड़काव पहले छिड़काव के 21 दिन बाद 150 ली. पानी में 10



ली. जीवामृत मिलाकर छिड़काव कराया गया। गेहूं प्रदर्शन में अंतरवर्तीय फसल के रूप में गेहूं की 10 कतार के बाद एक कतार सरसों की बुवाई गयी है। वैज्ञानिकों ने किसानों के साथ प्रदर्शन फसल का अवलोकन कर कीट-व्याधियों की प्रबंधन हेतु नीमास्त्र एवं दशपर्णी के घोल के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से जानकारी दी गयी।

गांवों का कलस्टर बनाकर पुष्प क्षेत्र विकसित करवाएं: कलेक्टर

जागत गांव हमार, नीमवा।

कलेक्टर दिनेश जैन ने बुधवार को उप संचालक, उद्यानिकी कार्यालय का निरीक्षण किया और उद्यानिकी कार्यालय में मैदानी अधिकारियों को उनकी योग्यता के अनुरूप विभागीय कार्य दायित्व सौंपने के साथ ही कलेक्टर कार्यालय के सामने एवं भवन में स्थित बगीचों को विकसित करवाने के निर्देश भी दिए।

कलेक्टर ने उद्यानिकी कार्यालय में पदस्थ स्टाफ, स्वीकृत पद, रिक्त पदों की जानकारी ली। उन्होंने अधिकारी, कर्मचारियों की दौरा डायरी, उपस्थिति पंजी एवं सेवा अभिलेखों का अवलोकन भी किया। कलेक्टर जैन ने उद्यानिकी कार्यालय में रिकार्ड के बस्ते सुव्यवस्थित तरीके से रखवाने की व्यवस्था करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले में स्थापित नर्सरियों की संख्या और नर्सरियों में पदस्थ कर्मचारियों और उत्पादित पौधों के बारे में भी जानकारी ली। उपसंचालक उद्यानिकी श्री अंतर सिंह कन्नौजी को निर्देश दिए कि वे नेट शेड योजना, स्प्रिंकलर योजना, ड्रिप योजना के तहत



लाभान्वित किसानों की नामजद सूची संकलित कर संबंधित नस्तियों में रखे। साथ ही किसानों की सफलता की कहानियों का भी प्रचार प्रसार करवाएं। कलेक्टर ने पुष्प क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम के तहत गांवों का कलस्टर बनाकर, पुष्प क्षेत्र विकास करवाने के निर्देश भी दिए। इस निरीक्षण के दौरान उप संचालक उद्यानिकी अंतर सिंह कन्नौजी, जिला संयोजक राकेश राठौर, क्षेत्र संयोजक शिवेन्द्र सिंह सोलंकी, अधीक्षक राधेश्याम सूत्रकार एवं अन्य अधिकारी -कर्मचारी उपस्थित थे।

केवीके द्वारा बकरी कृमिनाशी शिविर का आयोजन

जागत गांव हमार, लहार (भिंड)

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा निकरा परियोजना अंतर्गत चयनित गांव गिरवासा में बकरी कृमिनाशी शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा 260 से अधिक बकरियों को लिवरफ्लूक की दवा पिलाई गई।

इस अवसर पर शिविर में बकरी पालकों को जानकारी देते हुए केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.पी. सिंह ने बताया कि बकरियों में लिवरफ्लूक के कारण उनके पेट में कृमिनाशी की समस्या बहुत अधिक होती है। इस कारण बकरियों का स्वास्थ्य प्रभावित होने के साथ-साथ उनका विकास और वृद्धि रुक जाती है। जिसके चलते बकरियों के दुग्ध उत्पादन, मांस उत्पादन और वजन बढ़ोतरी नहीं होती है। इससे बकरी पालन में मनवांछित लाभ प्राप्त नहीं हो पाता है। इसलिए बकरी पालकों को चाहिए कि बकरियों से मांस एवं दूध अच्छा



प्राप्त होने के साथ ही बकरियों का स्वास्थ्य भी बेहतर रहे। वह समय से गर्भवती हो और स्वस्थ बच्चों को जन्म दे सकें। इसके लिए उन्हें नियमित तौर पर कृमिनाशक दवा बकरी एवं बकरों के शरीर भार के अनुसार पिलाते रहना चाहिए। डॉक्टर सिंह ने बताया कि एक माह की उम्र से

बड़े कोई भी बकरी या बकरा को उन्हें उनके शरीर भार के अनुसार बाजार में उपलब्ध अच्छी कृमिनाशक दवा खरीद कर प्रत्येक तीन माह के अंतर से पिलाते रहना चाहिए। इससे उनका स्वास्थ्य बेहतर रहने के साथ ही उनसे अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। लहार क्षेत्र के गिरवासा गांव में बकरी कृमिनाशी शिविर का आयोजन निकरा परियोजना अंतर्गत किया गया। जिसमें संपूर्ण गांव की 260 से अधिक बकरियों को आज मौके पर जाकर दवा पिलाई गई। इस अवसर पर केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आरपीएस तोमर एवं दीपेंद्र शर्मा द्वारा शिविर में सहयोग प्रदान किया गया।

'फिशरीज इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड' को अगले तीन वर्षों के लिए वित्त वर्ष 2025-26 तक बढ़ाने का निर्णय मछली किसानों आत्मनिर्भर बनाने 6000 करोड़ की नई योजना का ऐलान

जागत गांव हमार, नई दिल्ली।

सरकार ने असंगठित मत्स्य पालन क्षेत्र को औपचारिक रूप देने, सूक्ष्म और लघु उद्यमों को इंस्टीट्यूशनल फंडिंग की सुविधा देने और जल कृषि बीमा को बढ़ावा देने के लिए 6,000 करोड़ रुपये की योजना की घोषणा की। इसके साथ ही सरकार ने 7,522.48 करोड़ रुपये के पहले से अप्रूव्ड फंड और 939.48 करोड़ रुपये के बजटीय समर्थन से 'फिशरीज इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड' को अगले तीन वर्षों के लिए वित्त वर्ष 2025-26 तक बढ़ाने का भी निर्णय लिया।

मछुआरों, मछली किसानों को फायदा- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता

में यूनियन कैबिनेट ने 'प्रधानमंत्री मत्स्य किसान समृद्धि सह-योजना' को मंजूरी दी, जो प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत केंद्रीय उप-योजना है। नई सब-स्कीम मछुआरों, मछली किसानों, मछली श्रमिकों, सूक्ष्म और लघु उद्यमों और मछली किसान उत्पादक संगठनों सहित अन्य के लिए होगी। इस योजना का लक्ष्य सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में वित्त वर्ष 2023-24 से वित्त वर्ष 2026-27 तक 4 वर्षों की अवधि में 6,000 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश के साथ सूक्ष्म और लघु उद्यमों पर ध्यान केंद्रित करते हुए मत्स्य पालन क्षेत्र को संगठित रूप देना है।



1.7 लाख नए रोजगार पैदा होने का अनुमान

एक आधिकारिक बयान के मुताबिक, इसमें से लगभग 50 प्रतिशत यानी 3,000 करोड़ रुपये विश्व बैंक और एएफडी बाहरी फंडिंग से आएंगे जबकि शेष 50 प्रतिशत राशि लाभार्थियों और निजी क्षेत्र से अपेक्षित है। इस उप-योजना से लगभग 1.7 लाख नए रोजगार पैदा होने का अनुमान है, जिसमें 75,000 महिलाओं को रोजगार देने पर विशेष जोर रहेगा। इसका लक्ष्य सूक्ष्म और लघु उद्यमों वैल्यू चेन में 5.4 लाख निरंतर रोजगार के अवसर पैदा करना भी है। यह 40 लाख छोटे और सूक्ष्म उद्यमों को कार्य-आधारित पहचान प्रदान करने के लिए एक 'नेशनल फिशरीज डिजिटल प्लेटफॉर्म' बनाएगा। यह संस्थागत ऋण तक पहुंच प्रदान करते हुए 64 लाख सूक्ष्म उद्यमों और 5,500 मत्स्य पालन सहकारी समितियों का भी समर्थन करेगा।

स्ट्राबेरी और जिमिकंद कलेक्टर को भेंट किए

कृषि विज्ञान केंद्र बड़वानी में आत्मा गवर्निंग बोर्ड की बैठक आयोजित



जागत गांव हमार, बड़वानी।

कलेक्टर डॉ. राहुल फटिंग की अध्यक्षता में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र बड़वानी में आत्मा गवर्निंग बोर्ड की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान कलेक्टर ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि किसान जैविक खेती को अधिक से अधिक अपनाएं क्योंकि आज के समय में जैविक खेती ही मृदा सहित मनुष्य की भी आवश्यकता बन गई है। जैविक फसलों का जहां मूल्य अधिक मिलता है, वहीं इससे मृदा की उर्वरक क्षमता भी बढ़ती है और मनुष्य को स्वास्थ्य लाभ भी प्राप्त होता है। बैठक में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. बड़ोदिया, उप संचालक कृषि श्री आरएल जामरे सहित पशुपालन, मत्स्यपालन, उद्यानिकी विभाग के अधिकारी एवं कृषकगण उपस्थित थे।

ताराचंद बेलजी तकनीक - इस दौरान बैठक में उपस्थित ग्राम मण्डवाड़ा के वरिष्ठ किसानों ने कलेक्टर को बताया कि वे पूर्ण रूप से गन्ना, कपास एवं केला की जैविक खेती ताराचंद बेलजी तकनीक के माध्यम से कर रहे हैं। इस तकनीक के माध्यम से खेती करके वे अपनी मृदा की शक्ति को सकारात्मक रूप से बढ़ा रहे हैं, साथ ही कृषि की लागत भी कम बैठती है और मुनाफा अधिक होता है। जब वे रासायनिक खेती करते थे, तो अधिक मुनाफा नहीं

मिलता था, जब से वे जैविक ताराचंद बेलजी तकनीक से जैविक खेती कर रहे हैं उन्हें लगभग दुगुना मुनाफा होने लगा है।

स्ट्राबेरी और जिमिकंद कलेक्टर को भेंट किए - बैठक के दौरान ग्राम सालीटाण्डा के कृषक श्री हिमांशु डावर ने अपने खेत में जैविक पद्धति से उगाई हुई स्ट्राबेरी भी भेंट की। इस दौरान उन्होंने कलेक्टर को बताया कि वे कक्षा 10वीं तक पढ़े हैं तथा उन्हें उद्यानिकी विभाग के माध्यम से स्ट्राबेरी के पौधे प्राप्त हुए थे। उन्होंने उन्होंने जैविक पद्धति से अपने खेत में स्ट्राबेरी उगाई है। जिसे वे बड़वानी सहित आस-पास के बाजार में 200 रुपये प्रति किलोग्राम विक्रय करते हैं, जिससे उन्हें अच्छा मुनाफा हुआ है। इस वर्ष उन्हें सर्वोत्तम कृषक का जिला स्तरीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। कलेक्टर ने श्री हिमांशु की पीठ थपथपाते हुए उनके कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि अगर हौसला हो तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है। बैठक के दौरान कृषक श्री मुकेश पाटीदार ने कलेक्टर को अपने खेत में लगे हुए जिमिकंद भी भेंट किये। कलेक्टर ने उन्हें भी जैविक खेती हेतु प्रोत्साहित करते हुए कहा कि क्षेत्र के किसानों का जैविक खेती के प्रति रुझाव देखकर अच्छा लगता है। अतः किसान स्वयं तो जैविक खेती अपनाएं साथ ही अन्य कृषकों को भी इसके लाभ बताएं।

निर्यात बंधु स्कीम में निर्यात हेतु प्रशिक्षित करें

बैठक के दौरान कलेक्टर ने उप संचालक कृषि श्री आरएल जामरे को निर्देशित किया कि जिले में बहुत से कृषक उन्नतशील खेती करते हैं तथा जिले से कई फसलों का निर्यात भी किया जाता है, अतः जिले के कृषकों को निर्यात बंधु स्कीम के तहत निर्यात हेतु प्रशिक्षित किया जाये। जिससे कि किसान अपनी फसल दलाल के माध्यम से विक्रय न करते हुए स्वयं ही निर्यात कर सकें। जिससे उन्हें अपनी फसलों के अधिक दाम से अधिक मुनाफा भी प्राप्त होगा। कलेक्टर ने कृषि विज्ञान केंद्र का भ्रमण - बैठक के पश्चात कलेक्टर डॉ. राहुल फटिंग ने कृषि विज्ञान केंद्र का भी भ्रमण किया। इस दौरान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. बड़ोदिया ने उन्हें केंद्र में संचालित विभिन्न इकाइयों सहित बकरीपालन, गौ पालन, मुर्गी पालन, जैविक खाद, कंचुआ खाद सहित केंद्र में लगे हुए गेहूं एवं चने की फसल की विभिन्न प्रजातियों के बारे में भी जानकारी दी।

पशुपालकों आय होगी दोगुनी

डेयरी खोलने के लिए सरकार दे रही है सब्सिडी पर लोन

जागत गांव हमार, नई दिल्ली।

डेयरी एक ऐसा व्यवसाय है, जिसे सबसे कम दो गाय या दो भैंस के साथ शुरू किया जा सकता है। इसमें पूंजी भी कम लगती है। फिर धीरे-धीरे इसे आप बढ़ा सकते हैं। डेयरी फार्मिंग की ओर किसानों के बढ़ते रुझान की एक बड़ी वजह सरकारी योजनाएं भी हैं। जिनसे किसानों को काफी लाभ मिल रहा है। इन योजनाओं का मकसद पशुपालन से युवाओं की आय दोगुनी करने का है।

नाबार्ड की डेयरी इंटरप्रेन्योर डेवलपमेंट स्कीम - नाबार्ड की तरफ से युवाओं और किसानों डेयरी बिजनेस करने के लिए डेयरी इंटरप्रेन्योर डेवलपमेंट स्कीम के लोन और सब्सिडी दी जा रही है। इस स्कीम के तहत किसान भाइयों को डेयरी उद्योग खोलने के लिए आर्थिक सहाता प्रदान की जाएगी।

व्या है डेयरी उद्यमिता विकास योजना

डेयरी उद्यमिता विकास योजना एक सरकारी योजना है जो किसानों और पशुपालकों को डेयरी व्यापार में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस योजना के तहत छोटी डेयरी इकाइयों के लिए लोन उपलब्ध होते हैं जो उन्हें अधिक उत्पादक बनाने और उनके लिए बेहतर बाजार उपलब्ध कराने में मदद करते हैं। डेयरी व्यवसाय करने के इच्छुक इसके लिए सब्सिडी और लोन लेने के लिए बैंक में संपर्क कर सकते हैं। इसके बाद उन्हें नाबार्ड की तरफ से सब्सिडी वाला लोन मिल जाएगा। नाबार्ड की योजना के अंतर्गत डेयरी फार्मिंग के अलावा पशुपालन, मुर्गी पालन और पशुपालन के लिए लोन मिलता है।

कृषि महाविद्यालय में बीएससी प्रथम वर्ष के छात्रों का ओरिएन्टेशन कार्यक्रम

जागत गांव हमार, रीवा।

कृषि महाविद्यालय रीवा म. प्र. में बीएससी प्रथम वर्ष के छात्रों का ओरिएन्टेशन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में टीआरएस महाविद्यालय रीवा के प्रो. अखिलेश कुमार शुक्ला मुख्य अतिथि और प्रो. एसके त्रिपाठी अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय रीवा ने अध्यक्षता किया। इस अवसर पर, अपने उद्बोधन में डॉ. शुक्ला ने छात्र/छात्राओं को बताया कि छात्र अपने जीवन में संयम रखें और समय का प्रबंधन करें, जिससे उनके जीवन में वृद्धि एवं विकास सुचारु रूप से हो सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ. एसके त्रिपाठी ने छात्रों एवं छात्राओं को आर्षिवाद एवं शुभकामना देते हुए कहा कि, छात्र अपने जीवन में अनुशासन के साथ-साथ इच्छा शक्ति, उत्साह एवं जिज्ञासा रखें, जिससे उनके जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति एवं उनके व्यक्तित्व का विकास हो सके। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्रो. आर. के. तिवारी छात्र कल्याण अधिकारी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि

छात्र जीवन अनुशासन के साथ- अच्चे मित्रों के मार्गदर्शन एवं नियमित कक्षाओं में अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने छात्र/छात्राओं को क्वैरीकूलम, एकडमिक कलेण्डर आदि वितरित किया। इस कार्यक्रम में प्रो. बी.एम. मौर्या, प्रो. एस. एम. कुर्मवंशी, प्रो. राजेश तिवारी, डॉ. सी. जे. सिंह, डॉ. के.



सी. सिंह, डॉ. बी. के. तिवारी, डॉ. अखिलेश कुमार, डॉ. मनीषा द्विवेदी, डॉ. स्मिता सिंह, डा. अनिल गिरी, डा. संजय सिंह, संदीप कुमार शर्मा, डॉ. गुफरान उस्मानी, डॉ. सुधांधु पाण्डेय, डॉ. दिव्या सिंह, हरीष द्विवेदी ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन छात्र हर्षित पटेल एवं धन्यवाद डॉ. मनीषा द्विवेदी ने किया।

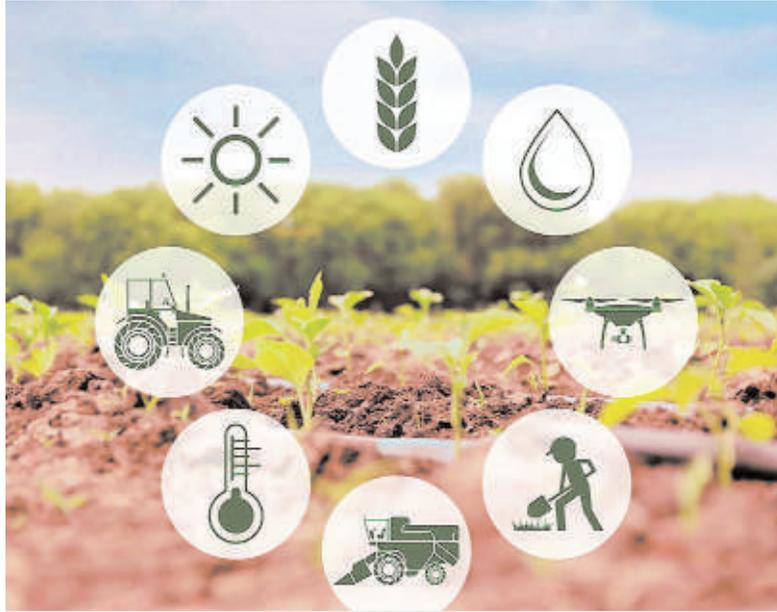
कृषि क्षेत्र में स्टार्टअप का अच्छा अवसर, सरकार दे रही है सहयोग

कृषि क्षेत्र में स्टार्टअप का अच्छा अवसर, सरकार दे रही है सहयोग

भोपाल।

आजकल लोग अधिक मुनाफा कमाने और खेती में बढ़ती रुचि को देखते हुए खेती से जुड़ा स्टार्टअप शुरू करना चाहते हैं, लेकिन जानकारी और पूंजी की कमी के कारण ऐसा नहीं कर पाते हैं या फिर अगर शुरू भी करते हैं तो उन्हें नुकसान का सामना करना पड़ता है। ऐसे लोगों के लिए एग्री बिजनेस इनक्यूबेटर काफी मददगार साबित हो रहे हैं। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) के तहत नवाचार और कृषि-उद्यमिता विकास कार्यक्रम चला रहा है। इसके जरिए देश में स्टार्टअप इकोसिस्टम नवाचार और कृषि-उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करके बढ़ावा दिया जा रहा है। ताकि लोग अपने साथ-साथ दूसरों के भी रोजगार पैदा कर सकें। इसी कड़ी में केंद्र सरकार लगातार ऐसे लोगों की मदद करती नजर आ रही है। कृषि-स्टार्टअप के प्रशिक्षण और इनक्यूबेशन और इस कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए अब तक 5 नॉलेज पार्टनर और 24 आरकेवीवाई एग्रीबिजनेस इनक्यूबेटर (आर-एबीआई) नियुक्त किए गए हैं। यहां जानकारी प्राप्त कर आप अपना स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं।

लोगों को दी जा रही वित्तीय सहायता- इस कार्यक्रम के तहत आइडिया/प्री-सीड चरण में 5 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाती है। कृषि और संबद्ध क्षेत्र के उद्यमियों/स्टार्टअप को अपने उत्पादों, सेवाओं, व्यापार प्लेटफार्मों आदि को बाजार में लॉन्च करने और उन्हें अपने उत्पादों और संचालन को बढ़ाने की सुविधा प्रदान करने के लिए प्रारंभिक चरण में 25 लाख रुपये की सहायता प्रदान की जाती है।



20 स्टार्ट-अप का होता है चयन

प्रत्येक नॉलेज पार्टनर और आर-एबीआई इनोवेशन और कृषि-उद्यमिता कार्यक्रम के तहत वित्तीय सहायता के लिए एक वर्ष में प्री-सीड और सीड चरण की प्रत्येक श्रेणी में अधिकतम 20 स्टार्ट-अप का चयन करते हैं। इस उद्देश्य के लिए गठित समिति द्वारा दी गई अनुशंसा के आधार पर चयनित स्टार्टअप को किशतों में बजट जारी किया जाता है।

लोगों को किया जा रहा प्रशिक्षित

इस कार्यक्रम के तहत भागीदारों और आरकेवीवाई एग्रीबिजनेस इनक्यूबेटर्स द्वारा स्टार्ट-अप को प्रशिक्षित और इनक्यूबेट किया जाता है। वित्तीय, तकनीकी, आईपी मुद्दों आदि पर तकनीकी सहायता और सलाह प्रदान की जाती है। इसके अलावा, भारत सरकार कृषि स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए कृषि-स्टार्टअप कॉन्क्लेव, कृषि मेलों और प्रदर्शनियों, वेबिनार, कार्यशालाओं आदि सहित विभिन्न राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम आयोजित करती है। उन्हें विभिन्न हितधारकों के साथ जोड़कर एक मंच प्रदान करना।

इस कार्यक्रम के तहत विभिन्न राज्यों में स्थित नॉलेज पार्टनर्स और आर-एबीआई को धनराशि जारी की जाती है। 2019-20 से 2023-24 तक विभिन्न ज्ञान भागीदारों और आर-एबीआई के माध्यम से कुल 1554 कृषि स्टार्टअप को किशतों में 111 157 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता जारी की गई है। देश भर के कई कृषि अनुसंधान संस्थानों और कृषि विश्वविद्यालयों में एग्री बिजनेस इनक्यूबेटर बनाए गए हैं, जहां वैज्ञानिक समय-समय पर स्टार्टअप शुरू करने के लिए कार्यक्रम चलाते हैं। आप यहां संपर्क करके भी अपना स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं।

देश भर में बनाए गए एग्री बिजनेस इनक्यूबेटर

इफिको सहित आठ कृषि विवि के वैज्ञानिक जुटे

ग्वालियर में नैनो यूरिया पर शोध

ग्वालियर। जागत गांव हमार

फसलों पर नैनो यूरिया के प्रभावों को पता करने के लिए ग्वालियर के राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विवि के इफिको सहित आठ इंस्टीट्यूट एवं विश्वविद्यालयों के कृषि वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विवि को बाजरा, चना और सोयाबीन की फसल पर नैनो यूरिया के प्रभाव का पता लगाने की जिम्मेदारी मिली है। अन्य विवि के वैज्ञानिक अलग अलग फसलों पर नैनो यूरिया के प्रभाव व दुष्प्रभाव का पता लगा रहे हैं। यह शोध वर्ष 2025 में पूरा होगा और साइंटिफिक डेटा जनरेट किया जाएगा। यह डेटा स्टेट डिपार्टमेंट, इफिको और केंद्रीय कृषि मंत्रालय को भेजा जाएगा। जिसके बाद किसानों का नैनो यूरिया की उपयोगिता और उसके प्रभाव से अवगत कराते हुए उपयोग करने की सलाह दी जाएगी।

इन विवि के वैज्ञानिक कर रहे शोध

ग्वालियर की कृषि यूनिवर्सिटी सहित देश की आठ कृषि यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक फसलों पर नैनो यूरिया के प्रभाव का पता लगाने के लिए शोध कर रहे हैं। इस प्रोजेक्ट को तमिलनाडु एग्रीकल्चर कृषि यूनिवर्सिटी नेतृत्व कर रही है इसके अंतर्गत इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीट्यूट नई दिल्ली में गेहूं और सरसों पर शोध हो रहा है, क्रीडा हैदराबाद यह मक्का और अरहर पर शोध, जीबी पंत यूनिवर्सिटी पंतनगर उत्तराखंड में धान व सरसों पर शोध। बसंत राव नायक मराठवाड़ा परभणी महाराष्ट्र यहां अरहर मक्का, गेहूं पर शोध होगा। इस्टिट्यूट ऑफ नैनो साइंस ऑफ टेक्नोलॉजी मोहाली पंजाब में माइक्रो न्यूट्रीयंट्स में बायोलॉजिकल, नाइट्रोजन फिक्सेशन, ग्रीनहाउस गैसों का इम्यूनिशन आदि का पता किया जाएगा। जबकि ग्वालियर राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय सरसों चना और सोयाबीन पर शोध हो रहा है इसको ओवर ओल यूनिवर्सिटी के संपर्क में इफिको रहेगा।

इनका कहना है



डॉ. अरविंद शुक्ला, कुलपति राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विवि

नैनो उर्वरक फसल के लिए कितना प्रभावी है इसका वैज्ञानिक पता लगा रहे हैं। यह शोध दो साल चलने वाला है। जिसके बाद जो डेटा आएगा उसके आधार पर किसानों को सलाह दी जाएगी। किस फसल पर नैनो यूरिया का प्रयोग किस तरह से करें जिससे लागत कम हो और लाभ अधिक हो।

कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा ने 'सारथी' पोर्टल की शुरुआत की प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 3 और सुविधाएं, 'सारथी' किसानों के लिए फायदेमंद

किसानों के लिए फायदेमंद

सरकार की तरफ से किसान भाइयों के लिए विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं। जिनमें एक योजना फसलों के खराब होने पर किसानों को बेहद मदद करती है। इस योजना का नाम प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना है। इस योजना के तहत किसान भाइयों को प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान से बचाने के लिए चलाया जा रहा है। योजना के जरिए सरकार किसान भाइयों को अपनी फसलों का बीमा करवाने के लिए सहायता राशि देती है। लेकिन अब फसल बीमा उत्पादों के लिए सरकार की तरफ से एक नया पोर्टल शुरू किया गया है। कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा ने 'सारथी' पोर्टल की शुरुआत की है। इस पोर्टल का मकसद पीएमएफबीवाई उत्पादों का एक कॉम्प्रिहेंसिव स्ट्रक्चर प्रदान करना है। योजना से जुड़ी जानकारी और समस्याओं का समाधान पाने के लिए किसान किसान भाई कृषि रक्षक पोर्टल व हेल्पलाइन नंबर की मदद ले सकते हैं।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और जनजातीय कार्य मंत्री अर्जुन मुंडा ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना शामिल कृषि-बीमा सैंडबॉक्स फेमवर्क प्लेटफॉर्म सारथी, कृषि-समुदाय के लिए लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम प्लेटफॉर्म व हेल्पलाइन नंबर 14447 की शुरुआत की। केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि यह देश किसानों और गांवों का है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में कृषि मंत्रालय लगातार किसानों की मदद कर रहा है। कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि किसानों को उन्नत करने के लिए प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किसानों की शक्ति, ताकत और मजबूती ही देश की शक्ति है। उन्होंने कहा छोटे और सीमांत किसानों के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना बहुत फायदेमंद साबित हुई है और इन तीनों पहलों से उनकी समस्याओं को हल किया जा सकेगा ताकि वे प्राकृतिक आपदाओं से आसानी से निपट सकें।

शिकायतों के समाधान के लिए हेल्पलाइन शुरू

फसल बीमा उत्पादों के लिए सरकार ने एक नया पोर्टल लॉन्च किया है। कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा ने 'सारथी' पोर्टल की पेशकश की, जिसका उद्देश्य फसल बीमा योजना पीएमएफबीवाई जैसे बीमा उत्पादों का एक कॉम्प्रिहेंसिव स्ट्रक्चर प्रदान करना है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के शिकायत निवारण सिस्टम को मजबूत करने और किसानों को अपनी चिंताएं दर्ज कराने में सक्षम बनाने के लिए कृषि रक्षक पोर्टल और हेल्पलाइन नंबर 14447 की भी शुरुआत की। इस मौके पर इन योजनाओं को लागू करने वाले हितधारकों के लिए पीएमएफबीवाई, मोडिफाइड इंटरस्ट सबवेंशन स्कीम और किसान क्रेडिट कार्ड के बारे में एक शिक्षण सामग्री प्रणाली भी शुरू की गई। कृषि मंत्री ने इन पहलों की शुरुआत के बाद कहा, हमारा मंत्रालय भारत को एक विकसित भारत में बदलने के लिए मिलकर काम कर रहा है।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

- » जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।
- » समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।
- » ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

“आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा”